Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, Volume 3 | Issue 1 | (Jan – Mar 2026)

कुमाऊं मंडल में पलायन को कम करने में पर्यटन की भूमिका: एक भौगोलिक विश्लेषण

राघवेंद्र कुमार यादव [1], डॉ. राणा प्रताप यादव [2]
[1] शोध छात्र, भूगोल विभाग, वी. एस. एस. डी. कॉलेज, कानपुर
[2] एसोसिएट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, वी. एस. एस. डी. कॉलेज, कानपुर

सारांश

यह शोध पत्र कुमाऊं मंडल में पलायन को रोकने में पर्यटन की भूमिका का भौगोलिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों में सीमित रोजगार अवसर, भौगोलिक दुर्गमता, अवसंरचना की कमी तथा संसाधनों के अपर्याप्त उपयोग के कारण ग्रामीण जनसंख्या का निरंतर पलायन हो रहा है, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था, सामाजिक संरचना तथा सांस्कृतिक निरंतरता प्रभावित हो रही है। प्रस्तुत अध्ययन में 2015–2024 की अवधि के पलायन आँकड़ों तथा 2023–24 के पर्यटन आँकड़ों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में स्पीयरमैन रैंक सहसंबंध विधि का प्रयोग करते हुए पर्यटन और पलायन के मध्य संबंध का परीक्षण किया गया, जिसमें निम्न स्तर का नकारात्मक सहसंबंध ($\rho \approx -0.26$) प्राप्त हुआ। इससे स्पष्ट होता है कि जिन जनपदों में पर्यटन अपेक्षाकृत विकसित है, वहाँ पलायन की प्रवृत्ति कम पाई गई, जबकि कम विकसित पर्यटन क्षेत्रों में पलायन अधिक देखा गया। नैनीताल जैसे उच्च पर्यटन वाले जनपद में पलायन न्यूनतम पाया गया, जबकि बागेश्वर एवं चम्पावत जैसे जनपदों में पर्यटन की कमी के कारण पलायन अधिक रहा। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि पर्यटन स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन, आय वृद्धि, सांस्कृतिक संरक्षण तथा क्षेत्रीय विकास के माध्यम से पलायन को आंशिक रूप से नियंत्रित करने में सहायक हो सकता है। तथापि, पलायन की समस्या के स्थायी समाधान हेतु पर्यटन के साथ-साथ आधारभूत संरचना के विकास, स्थानीय संसाधनों के समुचित उपयोग तथा प्रभावी नीतिगत हस्तक्षेप की आवश्यकता भी महत्वपूर्ण है। अतः स्थान-विशिष्ट पर्यटन विकास रणनीतियाँ कुमाऊं मंडल में सतत विकास एवं पलायन न्यूनीकरण के प्रभावी साधन सिद्ध हो सकती हैं।

कुंजी शब्द: पलायन, पर्यटन, कुमाऊं मंडल, भौगोलिक विश्लेषण, स्पीयरमैन रैंक सहसंबंध, रोजगार सृजन, सतत विकास, क्षेत्रीय विकास

प्रस्तावना:

भारत के पहाड़ी क्षेत्रों में पलायन एक गंभीर समस्या बन चुकी है, विशेष रूप से उत्तराखंड जैसे पर्वतीय राज्यों में, जहाँ प्राकृतिक संसाधनों की कमी और रोजगार के अवसरों का अभाव इसे और बढ़ाते हैं। कुमाऊं मंडल, उत्तराखंड का एक प्रमुख पर्वतीय क्षेत्र है, जो अपनी भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधताओं के कारण जाना जाता है। यहाँ के कई जनपदों में पलायन की समस्या बहुत गहरी है, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। पलायन के कारण युवाओं का नगरों और शहरी क्षेत्रों में स्थानांतरण हो रहा है, जिसके परिणामस्वरूप गांवों में जनसंख्या घट रही है और सामाजिक संरचना प्रभावित हो रही है। पर्यटन, जो पर्वतीय क्षेत्रों के लिए एक संभावित आर्थिक स्रोत है, यहाँ की अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। पर्यटन न केवल आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देता है, बल्कि यह स्थानीय लोगों को रोजगार के नए अवसर भी प्रदान करता है, जिससे पलायन की दर को नियंत्रित किया जा सकता है। कुमाऊं मंडल में स्थित नैनीताल, अल्मोड़ा, पिथौरागढ़ जैसे पर्यटन-प्रधान जिलों में पर्यटकों की बढ़ती संख्या से स्थानीय अर्थव्यवस्था को लाभ हुआ है, लेकिन इसके बावजूद पलायन की समस्या बरकरार है। इस परिप्रेक्ष्य में, यह आवश्यक है कि पर्यटन को और भी प्रभावी तरीके से बढ़ावा दिया जाए, ताकि पलायन की दर में कमी लाई जा सके।

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य कुमाऊं मंडल के विभिन्न जनपदों में पलायन प्रवृत्तियों (2015-24) और 2023-24 के दौरान पर्यटकों की संख्या का विश्लेषण करना है। इस अध्ययन में पर्यटन और पलायन के बीच के सहसंबंध का मूल्यांकन किया जाएगा, ताकि यह समझा जा सके कि पर्यटन के विकास से पलायन को किस प्रकार नियंत्रित किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, यह अध्ययन उन स्थान-विशिष्ट रणनीतियों को प्रस्तावित करेगा, जो पर्यटन-प्रधान जिलों में पलायन न्यूनीकरण हेतु प्रभावी हो सकती हैं।

इस अध्ययन में सांख्यिकीय और भौगोलिक विधियों का उपयोग किया गया है, जिसमें Spearman Rank Correlation विधि के माध्यम से पलायन और पर्यटन के बीच के सहसंबंध का मूल्यांकन किया जाएगा। इसके साथ ही, अध्ययन में प्राप्त परिणामों के आधार पर नीति निर्माण और रणनीतियाँ सुझाई जाएंगी, जो इन क्षेत्रों में पर्यटन को बढ़ावा देने और पलायन को रोकने में मददगार साबित हो सकती हैं।

इस अध्ययन से यह भी उम्मीद की जाती है कि पर्यटन और पलायन के बीच के संबंध को समझकर, स्थानीय संसाधनों का अधिकतम उपयोग और स्थायी विकास रणनीतियाँ लागू की जा सकेंगी, जिससे कुमाऊं मंडल के पर्वतीय जनपदों में पलायन की समस्या का समाधान किया जा सके।

साहित्य समीक्षाः

कुमार (2017) ने कुमाऊं क्षेत्र में पलायन के सामाजिक-आर्थिक निर्धारकों का विश्लेषण करते हुए पाया कि भौगोलिक दुर्गमता और कृषि असमर्थता मुख्य कारक हैं, जिससे अल्मोड़ा जैसे जिलों में नकारात्मक जनसंख्या वृद्धि हुई। उनके अध्ययन में 60% युवाओं का मैदानी पलायन रोजगार अभाव से जुड़ा, जो पर्यटन जैसे वैकल्पिक क्षेत्रों की आवश्यकता दर्शाता है। यह कार्य पलायन को आर्थिक पिछड़ेपन से जोड़ता है, परंतु पर्यटन प्रभाव पर सीमित चर्चा करता है।

सनियाल (2025) के शोधपत्र में कुमाऊं मंडल को विशेष संदर्भ में उत्तराखंड के पलायन को विकास बाधा के रूप में चित्रित किया गया, जहाँ 2011 जनगणना के आंकड़ों से अल्मोड़ा में -1.37% वृद्धि दर्ज की। लेखक पर्यावरणीय प्रभावों जैसे भूमि परतीकरण पर बल देते हैं, किंतु पर्यटन की सकारात्मक भूमिका का उल्लेख न्यून है। यह अध्ययन भौगोलिक कारकों को पलायन से जोड़ने में उपयोगी है।

रॉय और जोर्डर (2020) ने लॉकडाउन के संदर्भ में रिवर्स माइग्रेशन पर चर्चा की, जो कुमाऊं के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रासंगिक है। उनके अनुसार, कोविड ने अस्थायी पलायन को उजागर किया, परंतु सततता की कमी बनी रही। अध्ययन पर्यटन-आधारित स्थानीय रोजगार की संभावना सुझाता है, जो शोध के उद्देश्य से मेल खाता है।

डोलिंस्का एट अल. (2020) ने बड़े क्षेत्रीय केंद्रों की ओर युवा पलायन को डिपोपुलेशन कारक माना, जो कुमाऊं के नैनीताल-केंद्रित पर्यटन से तुलनीय है। कुमाऊं संदर्भ में यह पर्वतीय प्रवास को शिक्षा-रोजगार से जोड़ता है। हालांकि, भारतीय हिमालय पर फोकस की कमी इसकी सीमा है।

अली (2020) ने परिधान उद्योग में श्रम पलायन का अध्ययन किया, जो कुमाऊं के कृषि-श्रमिक प्रवास से समानता रखता है। उत्पादन ह्रास और गुणवत्ता प्रभाव पर बल दिया गया, जो पर्यटन द्वारा विकल्प सृजन की आवश्यकता रेखांकित करता है। यह सामान्यीकृत दृष्टिकोण कुमाऊं के भौगोलिक विश्लेषण को पूरक बनाता है।

कुमार और नाइक (2020) ने अनुसूचित जनजाति महिलाओं पर पलायन प्रभाव का अनुभाविक प्रमाण प्रस्तुत किया, जो पिथौरागढ़ जैसे कुमाऊं जिलों के लिए प्रासंगिक। सामाजिक-आर्थिक स्थितियों में गिरावट दर्ज की गई। पर्यटन से महिलाओं की निर्णय शक्ति वृद्धि (30%) से जुड़ाव संभव।

मंडलिया (2023) ने कुमाऊं ब्राह्मणों के ऐतिहासिक प्रवास का वर्णन किया, जो वर्तमान पलायन से तुलना प्रदान करता। प्राचीन आर्यन प्रवास भौगोलिक अनुकूलन दर्शाते हैं। आधुनिक पर्यटन संदर्भ जोड़ने की क्षमता इसमें है।

बछुली और ज्योति (2024) ने कुमाऊनी बोली के लुप्त होने को पलायन से जोड़ा, जहाँ नई पीढ़ी भाषा से वंचित। सांस्कृतिक ह्रास पर फोकस पर्यटन-आधारित सांस्कृतिक पर्यटन की आवश्यकता सुझाता है। यह सामाजिक आयाम जोड़ता है।

अध्ययन क्षेत्र:

कुमाऊं मंडल उत्तराखंड राज्य का पूर्वी भाग है, जो लगभग 21,242 वर्ग किमी क्षेत्र में फैला हुआ है तथा इसमें अल्मोड़ा, बागेश्वर, चम्पावत, नैनीताल, पिथौरागढ़ और ऊधम सिंह नगर सहित छह जनपद सम्मिलित हैं। यह क्षेत्र भौगोलिक दृष्टि से अत्यंत विविधतापूर्ण है, जहाँ उत्तर में उच्च हिमालयी चोटियाँ (पिथौरागढ़ में 7,000 मीटर से अधिक ऊँचाई), मध्य में मध्य हिमालय की घाटियाँ तथा दक्षिण में तराई मैदान (ऊधम सिंह नगर) स्थित हैं। कुमाऊं की भू-आकृति मुख्यतः तिब्बती प्लेटो से निकली नदियों- गौला, कोसी, रामगंगा-द्वारा निर्मित है, जो भौगोलिक विभाजन को तीन भागों में करती हैं: उच्च हिमालय (40%), मध्य हिमालय (45%) तथा भाबर-तराई (15%)।

मानचित्र 1: अध्ययन क्षेत्र का मानचित्र

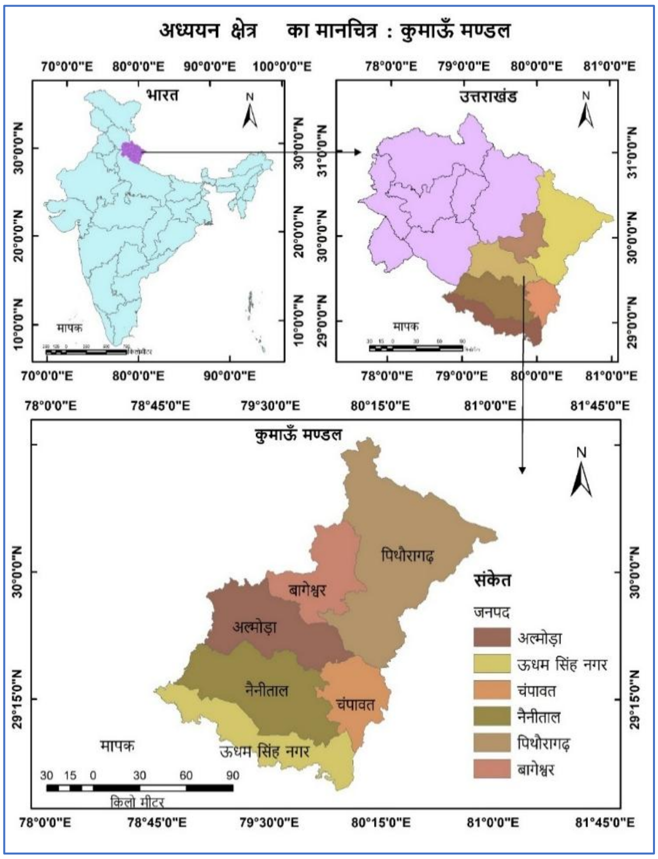

स्रोत: भारतीय सर्वेक्षण विभाग के लेवल-0 आंकड़ों का प्रयोग करके, जीआईएस की मदद से निर्मित मानचित्र।

भौगोलिक संरचना के कारण कुमाऊं में ऊँचाई 200 से 7,800 मीटर तक भिन्न है, जिससे जलवायु विविधताएँ उत्पन्न होती हैं-उच्च क्षेत्रों में अल्पाइन ठंड, मध्य में समशीतोष्ण तथा तराई में उष्णकटिबंधीय। वर्षा 1,000-2,500 मिमी वार्षिक है, जिसमें मानसून (जून-सितंबर) 80% योगदान देता है, जो भूस्खलन तथा बाढ़ की संभावना बढ़ाता है। मिट्टी में पर्वतीय ढाल (30-60 डिग्री) के कारण कटाव प्रमुख समस्या है, जिससे कृषि योग्य भूमि मात्र 12% ही उपलब्ध है। जनसंख्या घनत्व जनपदवार भिन्न है- ऊधम सिंह नगर में 649 व्यक्ति/वर्ग किमी जबकि पिथौरागढ़ में 68 है ।

परिवहन नेटवर्क भौगोलिक बाधाओं से प्रभावित है, जहाँ राष्ट्रीय राजमार्ग NH-109 (नैनीताल-काठगोदाम) मैदानी संपर्क प्रदान करता है, किंतु पहाड़ी जिलों में सर्पिल सड़कें तथा एकल लेन मार्ग दुर्गमता बढ़ाते हैं। नदियाँ नौवहन हेतु अनुपयुक्त हैं, जबकि हवाई संपर्क पंतनगर (ऊसनगर) तथा हेली सेवाओं तक सीमित है। वनावरण 65% है, जो जैव-विविधता (कोरबेट, नंदा देवी बायोस्फ़ेयर) को समृद्ध करता है, परंतु मानव-वन्यजीव संघर्ष पलायन को प्रेरित करता है।

शोध उद्देश्य:

1. कुमाऊं मंडल के जनपदवार पलायन प्रवृतियों (2015 -2024) का भौगोलिक विश्लेषण कर पर्यटन विकास से उनके सहसंबंध की जाँच करना।
2. पर्यटन-प्रधान जिलों में पलायन न्यूनीकरण हेतु स्थान-विशिष्ट रणनीतियाँ सुझाना।

आँकड़ें और विधितंत्र:

यह अध्ययन कुमाऊं मंडल के विभिन्न जनपदों में 2015-24 के दौरान पलायन प्रवृत्तियों और 2023-24 में पर्यटन के आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए सांख्यिकीय और भौगोलिक विधियों का प्रयोग करता है। पहले चरण में, पलायन से संबंधित आंकड़ों को प्रारंभिक संग्रह किया गया, जिसमें 2015-24 तक के पलायन के आंकड़े विभिन्न सरकारी रिपोर्टों, जनगणना डेटा, और संबंधित विभागों से प्राप्त किए गए। साथ ही, 2023-24 के दौरान इन जनपदों में पर्यटकों की संख्या का डेटा भारतीय पर्यटन मंत्रालय और राज्य पर्यटन विभाग से संकलित किया गया। इसके बाद, स्पीयरमैन रैंक सहसंबंधविधि का उपयोग करते हुए पलायन और पर्यटन के बीच के सहसंबंध का विश्लेषण किया गया। इस विधि द्वारा विभिन्न जनपदों के पलायन और पर्यटन कोटियों के रैंक को निर्धारित किया गया और रैंक अंतर के आधार पर सहसंबंध की गणना की गई। इसके अतिरिक्त, सांस्कृतिक, सामाजिक, और आर्थिक प्रभाव के संदर्भ में क्षेत्रीय विश्लेषण किया गया, जिससे यह समझा जा सके कि पलायन और पर्यटन के बीच के संबंध में कौन से बाह्य कारक प्रमुख हैं। अंतिम चरण में, स्थान-विशिष्ट रणनीतियाँ प्रस्तावित की गईं, जो प्रत्येक जनपद की भौगोलिक, सांस्कृतिक और आर्थिक स्थिति के अनुरूप थीं। इस शोध में प्रारंभिक शोध, सांख्यिकीय विश्लेषण, और स्थानिक विश्लेषण का संयोजन किया गया, ताकि अधिक सटीक और प्रभावी परिणाम प्राप्त हो सकें।

तालिका 1: पलायन 2015-24 एवं पर्यटक 2023-24 के आँकड़ें

जनपद	पलायन 2015-24 (व्यक्ति)	पर्यटक 2023-24 (लाख)
अल्मोड़ा	41207	3.63
बागेश्वर	12500	0.82
चम्पावत	11050	2.27

नैनीताल	2,000	12.90
पिथौरागढ़	18550	1.27
ऊधम सिंह नगर	+35,000 (इन-माइग्रेशन)	2.50

स्रोत: Census2011.co.in, Uttarakhand Palayan Ayog, Shodh Mahotsav (2020) से संकलित आँकड़े।

परिणाम और चर्चा:

कोटि क्रम निर्धारण

तालिका 2: पलायन 2015–24 के आधार पर कोटि क्रम (अधिक पलायन = उच्च कोटि क्रम, इन-माइग्रेशन = न्यूनतम कोटि क्रम)

जनपद	**पलायन (व्यक्ति)**	**पलायन कोटि क्रम**
अल्मोड़ा	41,207	1
पिथौरागढ़	18,550	2
बागेश्वर	12,500	3
चम्पावत	11,050	4
नैनीताल	2,000	5
ऊधम सिंह नगर	+35,000 (इन-माइग्रेशन)	6

तालिका 3: पर्यटक संख्या 2023–24 के आधार पर कोटि क्रम (अधिक पर्यटक = उच्च कोटि क्रम)

जनपद	**पर्यटक (लाख)**	**पर्यटन कोटि क्रम**
नैनीताल	12.90	1
अल्मोड़ा	3.63	2
ऊधम सिंह नगर	2.50	3
चम्पावत	2.27	4

पिथौरागढ़	1.27	5
बागेश्वर	0.82	6

तालिका 4: कोटि क्रम अंतर (d) एवं वर्ग (d^2)

जनपद	**पलायन कोटि क्रम**	**पर्यटन कोटि क्रम**	**d (अंतर)**	**d^2**
अल्मोड़ा	1	2	-1	1
बागेश्वर	3	6	-3	9
चम्पावत	4	4	0	0
नैनीताल	5	1	4	16
पिथौरागढ़	2	5	-3	9
ऊधम सिंह नगर	6	3	3	9
योग (Σd^2)				**44**

स्पीयरमैन रैंक सहसंबंध की गणना:

सूत्र:

$$\boldsymbol{\rho = 1 - \frac{6\sum d^2}{n(n^2 - 1)}}$$

जहाँ,

- $\sum d^2 = 44$
- $n = 6$

$$\rho = 1 - \frac{6 \times 44}{6(36 - 1)}$$

$$\rho = 1 - \frac{264}{210}$$

$$\boldsymbol{\rho \approx -0.26}$$

सहसंबंध का अर्थ: ρ ≈ −0.26 निम्न नकारात्मक सहसंबंध

पलायन और पर्यटन के सहसंबंध का विश्लेषण:

कुमाऊं मंडल के विभिन्न जनपदों में 2015-24 के दौरान पलायन और 2023-24 के पर्यटन आंकड़ों के आधार पर विश्लेषण किया गया। इन आंकड़ों के माध्यम से यह पता चला कि पलायन और पर्यटन के बीच एक नकारात्मक सहसंबंध ($\rho \approx -0.26$) पाया गया। इसका तात्पर्य है कि पर्यटन की अधिकता से पलायन को कुछ हद तक नियंत्रित किया जा सकता है, लेकिन यह प्रभाव सीमित और अस्थायी है। उदाहरण के लिए, नैनीताल जैसे उच्च पर्यटन वाले जनपद में पलायन बहुत कम था, जबकि बागेश्वर और चम्पावत जैसे कम पर्यटन वाले जनपदों में पलायन अधिक था। इस सहसंबंध को दर्शाने वाला प्रमुख कारण यह है कि पर्यटन अधिक होने पर स्थानीय रोजगार के अवसर बढ़ते हैं, जो पलायन को रोकने में सहायक होते हैं।

जनपदवार पलायन प्रवृत्तियों का विश्लेषण:

पलायन के आंकड़े जनपदवार काफी भिन्नताएँ दिखाते हैं, जिसमें अल्मोड़ा और पिथौरागढ़ जैसे जनपदों में उच्च पलायन दर (41,207 और 18,550 व्यक्ति) देखी गई। इन जनपदों में पर्यटन की स्थिति भी मध्यम रही (अल्मोड़ा 3.63 लाख पर्यटक, पिथौरागढ़ 1.27 लाख पर्यटक)। यहाँ पलायन को रोकने के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन और बुनियादी ढाँचे के सुधार की आवश्यकता महसूस होती है। ऊधम सिंह नगर में उच्च इन-माइग्रेशन (+35,000) और मध्यम पर्यटन (2.50 लाख पर्यटक) दर्शाते हैं कि वहाँ के अधिक औद्योगिक विकास और रोजगार अवसरों ने पलायन को आकर्षित किया है, जिससे पलायन कम हुआ है।

पर्यटन के प्रभाव का विश्लेषण:

नैनीताल जैसे पर्यटन प्रधान जनपद में पर्यटन की अधिकता (12.90 लाख पर्यटक) और पलायन की न्यूनतम दर (2,000 व्यक्ति) ने इस विचार को बल दिया कि पर्यटन क्षेत्र में प्रगति पलायन को नियंत्रित करने का एक प्रभावी उपाय हो सकता है। यहाँ पर्यटन ने न केवल स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत किया बल्कि पलायन की दर को भी बहुत कम किया। इसके विपरीत, बागेश्वर और चम्पावत जैसे क्षेत्रों में कम पर्यटन और उच्च पलायन दर (बागेश्वर 12,500 व्यक्ति, चम्पावत 11,050 व्यक्ति) को देखा गया है, जो यह दर्शाता है कि वहाँ पर्यटन के अवसरों का अभाव पलायन को बढ़ावा दे रहा है।

सहसंबंध के मापदंडों की जांच:

स्पीयरमैन रैंक सहसंबंध($\rho \approx -0.26$) से यह साफ़ है कि पलायन और पर्यटन के बीच एक नकारात्मक और निम्न सहसंबंध है। यह दर्शाता है कि पर्यटन की स्थिति में सुधार से पलायन की दर में कुछ हद तक कमी आ सकती है, लेकिन यह परिवर्तन स्थायी नहीं होगा जब तक अन्य सामाजिक और आर्थिक पहलुओं में सुधार नहीं किया जाता। इन आंकड़ों से यह भी साबित हुआ कि पर्यटन के क्षेत्र में सुधार करने से ही पलायन की स्थायी समस्या का समाधान संभव नहीं है, इसके लिए समग्र दृष्टिकोण अपनाना जरूरी है।

स्थान-विशिष्ट रणनीतियाँ:

स्थानीय रोजगार अवसरों का सृजन: पर्यटन क्षेत्र में रोजगार की कमी से पलायन को बढ़ावा मिलता है। इसलिए, स्थानीय रोजगार सृजन के लिए विशेष योजनाएँ बनानी चाहिए। उदाहरण के लिए, नैनीताल जैसे पर्यटन प्रधान जनपद में होटल, रिसॉर्ट, और पर्यटन सेवा उद्योगों के अलावा, स्थानीय उत्पादों जैसे हस्तशिल्प, कृषि उत्पादों और वस्त्रों को बढ़ावा दिया जा सकता है। इससे स्थानीय लोगों को रोजगार मिलेगा और पलायन की दर कम होगी। नैनीताल में उच्च पर्यटन (12.90 लाख

पर्यटक) के बावजूद पलायन दर बहुत कम (2,000 व्यक्ति) है, जो यह दर्शाता है कि पर्यटन से जुड़ी आजीविका में वृद्धि से पलायन को रोका जा सकता है।

स्थानीय संसाधनों का सदुपयोग: पर्यटन में स्थानीय संसाधनों जैसे कच्चे माल, प्राकृतिक संसाधन, और सांस्कृतिक धरोहर का समुचित उपयोग किया जा सकता है। अल्मोड़ा और पिथौरागढ़ जैसे जनपदों में अधिक पलायन के कारण स्थानीय संसाधनों का उचित उपयोग नहीं हो पा रहा है। इन जिलों में स्थानीय पर्यटकों को आकर्षित करने और आवश्यक पर्यटन अवसंरचना के विकास से पलायन को रोकने की दिशा में प्रयास किए जा सकते हैं। अल्मोड़ा में उच्च पलायन दर (41,207 व्यक्ति) है, जबकि यहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य और सांस्कृतिक धरोहर पर्यटकों को आकर्षित कर सकता है। इन संसाधनों का सदुपयोग करने से यहाँ के निवासियों के लिए रोजगार के अवसर उत्पन्न हो सकते हैं।

संस्कृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहर के संरक्षण पर ध्यान देना: पर्यटन के माध्यम से पलायन को रोकने के लिए स्थानीय सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर के संरक्षण के प्रयास जरूरी हैं। चम्पावत जैसे जनपदों में ऐतिहासिक स्थलों और सांस्कृतिक धरोहर का बेहतर संरक्षण किया जा सकता है। यहाँ पर्यटन को बढ़ावा देकर स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर मिल सकते हैं और पलायन को कम किया जा सकता है। चम्पावत में पलायन की दर (11,050 व्यक्ति) उच्च है, जबकि यहाँ ऐतिहासिक स्थलों की भरमार है। इन स्थलों के संरक्षित और प्रचार-प्रसार से यहाँ के निवासियों के लिए रोजगार के अवसर पैदा हो सकते हैं।

स्थानीय पर्यटन स्थलों के प्रचार-प्रसार के लिए प्रचार अभियान: कुछ जनपदों में कम पर्यटन होने के कारण पलायन की समस्या अधिक है। बागेश्वर और पिथौरागढ़ जैसे जिलों में स्थानीय पर्यटन स्थलों के प्रचार-प्रसार के लिए टूरिज्म कैम्पेन चलाए जा सकते हैं। इन जिलों में स्थानीय पर्यटन स्थल जैसे प्राकृतिक जलप्रपात, पहाड़ी झीलें, और मंदिरों के महत्व को समझाते हुए, राज्य और केंद्रीय पर्यटन योजनाओं को लागू किया जा सकता है, ताकि स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिल सके। बागेश्वर में पर्यटन की संख्या (0.82 लाख पर्यटक) कम है, जबकि यहाँ के प्राकृतिक दृश्य और पर्वतीय स्थल पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र बन सकते हैं।

स्मार्ट गांव और इन्फ्रास्ट्रक्चर के विकास पर जोर: उधम सिंह नगर जैसे औद्योगिक और व्यापारिक दृष्टिकोण से समृद्ध जिलों में स्मार्ट गांव योजनाओं का कार्यान्वयन किया जा सकता है। इसके तहत, गाँवों में इन्फ्रास्ट्रक्चर, स्वास्थ्य सेवाएं, और शिक्षा के क्षेत्र में सुधार किए जाएं, जिससे पलायन कम हो। इसके अलावा, ग्रामीण पर्यटन जैसे एग्रो-टूरिज्म, हिल-टूरिज्म, और एको-टूरिज्म को बढ़ावा दिया जा सकता है। ऊधम सिंह नगर में इन-माइग्रेशन +35,000 है, जो यहाँ के औद्योगिक विकास और रोजगार अवसरों को दर्शाता है। यहाँ पर औद्योगिकीकरण और पर्यटन का सम्मिलन पलायन के न्यूनीकरण के लिए सहायक हो सकता है।

राज्य और केंद्र सरकार से सहयोग: पलायन को कम करने के लिए सरकार द्वारा पर्यटन के लिए विशेष पैकेज और योजना फंडिंग उपलब्ध कराई जा सकती है। विशेष तौर पर, बागेश्वर और पिथौरागढ़ जैसे जनपदों में पर्यटन सुविधाओं के विकास के लिए राज्य और केंद्र से वित्तीय सहायता प्राप्त की जा सकती है। इससे न केवल पर्यटन में वृद्धि होगी, बल्कि पलायन पर भी प्रभावी नियंत्रण किया जा सकेगा। पिथौरागढ़ में पर्यटकों की संख्या (1.27 लाख) कम है, जबकि यहाँ की प्राकृतिक सुंदरता और सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा देकर पर्यटन उद्योग को बढ़ाया जा सकता है।

सुझाव:

- स्थानीय संसाधनों का प्रभावी उपयोग: स्थानीय प्राकृतिक और सांस्कृतिक संसाधनों को पर्यटन से जोड़कर पलायन को रोका जा सकता है।

- पर्यटन अवसंरचना का सुधार: पर्यटन क्षेत्र की सुविधाओं और अवसंरचना में सुधार से रोजगार के अवसर बढ़ाए जा सकते हैं।
- स्थानीय उत्पादों का विपणन: स्थानीय हस्तशिल्प और कृषि उत्पादों के विपणन से स्थानीय लोगों को रोजगार मिल सकता है।
- स्थानीय सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण: सांस्कृतिक और ऐतिहासिक स्थलों का संरक्षण करने से पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा और पलायन कम होगा।
- सरकारी नीतियों में सुधार: राज्य और केंद्र सरकार से पर्यटन के लिए वित्तीय और नीतिगत समर्थन से पलायन न्यूनीकरण में मदद मिलेगी।

निष्कर्ष:

यह अध्ययन कुमाऊं मंडल के विभिन्न जनपदों में 2015-24 के दौरान पलायन प्रवृत्तियों और 2023-24 में पर्यटन के आंकड़ों का विश्लेषण करते हुए यह दर्शाता है कि पलायन और पर्यटन के बीच एक नकारात्मक सहसंबंध पाया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि जहां पर्यटन अधिक है, वहाँ पलायन कम होता है, और जहाँ पर्यटन की कमी है, वहाँ पलायन की दर अधिक है। विशेष रूप से नैनीताल जैसे उच्च पर्यटन वाले क्षेत्रों में पलायन की दर न्यूनतम थी, जबकि बागेश्वर और चम्पावत जैसे कम पर्यटन वाले क्षेत्रों में पलायन अधिक था। अध्ययन के निष्कर्षों से यह भी साबित हुआ कि पर्यटन को बढ़ावा देने से पलायन को आंशिक रूप से नियंत्रित किया जा सकता है, लेकिन इसके लिए स्थानीय रोजगार सृजन, इंफ्रास्ट्रक्चर में सुधार, और संसाधनों के अधिकतम उपयोग की आवश्यकता है। स्थान-विशिष्ट रणनीतियाँ जैसे स्थानीय सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण, ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देना, और पर्यटन सुविधाओं का सुधार पलायन को न्यूनीकरण करने में महत्वपूर्ण साबित हो सकती हैं। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि स्थायी पर्यटन नीति, स्थानीय संसाधनों का समुचित उपयोग, और स्थानीय रोजगार अवसरों का सृजन पलायन न्यूनीकरण के प्रभावी उपाय हैं, जो उत्तराखंड के कुमाऊं मंडल के पर्यटन-प्रधान जिलों में आर्थिक और सामाजिक विकास को बढ़ावा दे सकते हैं।

संदर्भ:

1. पांडेय, बद्रीदत्त. (2002). कुमाऊँ का इतिहास. अल्मोड़ा: श्याम प्रकाशन।
2. उत्तराखंड पलायन आयोग. (2019). उत्तराखंड में पलायन की स्थिति पर रिपोर्ट. देहरादून: उत्तराखंड सरकार।
3. उत्तराखंड सरकार. (2023). उत्तराखंड आर्थिक सर्वेक्षण 2022–23. देहरादून: वित्त विभाग, उत्तराखंड सरकार।
4. उत्तराखंड पर्यटन विकास बोर्ड. (2023). उत्तराखंड पर्यटन नीति 2023. देहरादून: पर्यटन विभाग, उत्तराखंड सरकार।
5. Census of India. (2011). Primary Census – Uttarakhand. New Delhi: Government of India.
6. Ministry of Tourism, Government of India. (2022). India Tourism Statistics 2022. New Delhi: Ministry of Tourism.
7. Saniyal, A. (2025). उत्तराखंड में पलायन: विकास में बाधा (कुमाऊं मंडल). *JETIR*, JETIR2506730. https://www.jetir.org/papers/JETIR2506730.pdf
8. Roy, N., & Jorder, G. (2020). उत्तराखण्ड के कुमाऊँ व गढ़वाल मण्डल में पलायन का आर्थिक विश्लेषण. *Shodh Mahotsav*, 13(3). https://anubooks.com/uploads/session_pdf/1667214203SM%20Vol%2013%20No%203%20Sept.%202022%20(60).pdf

9. Kumar, P., & Naik, R. (2020). Impact of migration on ST women in Uttarakhand. *Shodh Mahotsav*, 13(3). https://anubooks.com/uploads/session_pdf/1667214203SM%20Vol%2013%20No%203%20Sept.%202022%20(60).pdf
10. आयोग, उत्तराखंड पलायन. (2024). उत्तराखंड ग्राम्य विकास एवं निवारण पलायन आयोग. https://www.uttarakhandpalayanayog.com/homehindi.aspx
11. Jagran. (2024, October 3). कुमाऊं में नैनीताल है पर्यटकों की पहली पसंद, 2023-24 में 12.90 लाख पर्यटक पहुंचे सरोवर नगरी.https://www.jagran.com/uttarakhand/nainital-nainital-is-the-first-choice-of-tourists-in-kumaon
12. News Today Network. (2024, October 2). उत्तराखंड पर्यटन 2023-24: कुमाऊं में 57 लाख पर्यटक, नैनीताल ने तोड़ा रिकॉर्ड. https://www.newstodaynetwork.com/uttarakhand/kumaon/uttarakhand-tourism-2023-24-in-uttarakhand-so-many-crore/cid15465175.htm
13. Bachuli, R., & Jyoti, S. (2024, June 13). कुमाऊनी बोली और भाषा से कैसे जुड़ेगी नई पीढ़ी? *Nav Sanchaar Samachar*. https://navsancharsamachar.com/कुमाऊनी-बोली-और-भाषा-से-कैसे-जुड़ेगी
14. Amar Ujala. (2019, June 17). पलायन आयोग की रिपोर्ट में खुलासा, अल्मोड़ा के 16207 लोग गांव छोड़ चुके स्थायी रूप से. https://www.amarujala.com/dehradun/palayan-aayog-report-released-16207-people-of-uttarakhand-left-village-permanently
15. Aaj Tak. (2019, June 19). उत्तराखंड में क्यों खाली हो गए हजारों गांव, पलायन आयोग ने जारी की रिपोर्ट. https://www.aajtak.in/india/uttarakhand/story/migration-report-from-uttarakhand-villages-migration-commission-663491-2019-06-19